



Living the LOTUS

New Year's Issue
2018

Buddhism in Everyday Life

New Year's Message

एक सच्चे और स्वतंत्र विश्वास की ओर

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिशो कोसेइ काइ

रिशो कोसेइ-काइ की अस्सीवाँ वर्षगाँठ को चिन्हित करनेवाला मील का पत्थर:

अपने पूर्ववर्तियों के प्रति जिन्होंने संस्थान की नींव रखी हम आभार का ऋण चुकाने का संकल्प लेते हैं



मैं आपको नव वर्ष की शुभकामनाएँ देता हूँ।

बीते वर्ष मैंने सदस्यों के धर्म के अभ्यास के अपने वार्षिक दिशानिर्देश में कहा था, “हमें अपने दैनिक जीवन में कृतज्ञता और आभार व्यक्त करना चाहिए।” मुझे अपने धर्म केंद्रों के संचालकों और संघ के विभिन्न अन्य लोगों से जानकर खुशी हुई है कि आप में से एक बड़ी संख्या ने इसे अपनी थीम के रूप में अपनाया और इसे अपने कार्यस्थल, पड़ोस और घरों में अभ्यास किया। मुझे महा पवित्र हॉल में सदस्यों के धर्म यात्रा के भाषणों से भी जानने में आया है।

हमें सिखाया जाता है कि यदि हम शाक्यमुनि की शिक्षा की गहराई से चर्चा करते हैं, तो हम अंततः कृतज्ञता और आभार महसूस करेंगे। हम आशा करते हैं कि हम इसे जारी रखेंगे, जो सभी के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, हमेशा हमारे दिमाग में कुरेदता है।

इस वर्ष, हमारी संस्था इसकी स्थापना की अस्सीवाँ वर्षगाँठ का आयोजन करेगी। इस अस्सी वर्ष की अवधि के दौरान, संस्थापक निक्क्यो निवानो ने चौवन वर्षों तक प्रेसिडेण्ट के रूप में कार्य किया, और मैंने छब्बीस वर्षों तक ऐसा किया है।

स्मरण करें, संस्थापक और मैं दोनों ने लगातार बुद्ध की शिक्षा

से अवगत कराया है, जिसे हमारे सदस्यों ने दिल में लिया और अभ्यास किया है। जैसा कहा है, मेरा मानना है कि हमारी संस्था ने अपने अस्सी वर्ष के इतिहास में जो कुछ भी किया है, उससे कुछ अधिक नहीं है।

जिस अवधि के दौरान संस्थापक ने रिश्शो कोसेइ-काइ की स्थापना की, और जिसके दौरान लोगों ने धीरे-धीरे धर्म का प्रचार प्रसार किया, यह द्वितीय विश्व युद्ध के आसपास का भीषण उथल-पुथल का समय था। उस समय लोगों की सबसे बड़ी इच्छा गरीबी, बीमारी, और संघर्ष के दुख से मुक्ति पाने की थी। संगठन के नेताओं ने, जो हमारे अग्रज थे, फिर भी जिन्होंने हमारे सामने बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए भी, बहुत से लोगों को बचाने का अथक प्रयास किया, उन्हें बुद्ध मार्ग की ओर प्रवृत्त कराने और कई बार कड़ी मेहनत करके उपलब्ध साधनों का युक्ति से प्रयोग का उत्तम प्रयास किया।

मुझे लगता है कि, मोटे तौर पर, अतीत में रिश्शो कोसेइ-काइ के नेताओं ने बहुत लंबी बातें नहीं की थी, फिर भी उनमें सरल शब्दों का प्रयोग करके लोगों को प्रभावित करने क्षमता थी। यदि जब कभी जो बोलते थे, वह रूखा लगता था। अन्य लोगों की खुशी के लिए उनके दिल की एक मात्र इच्छा में गहरी करुणा थी।

“मैं किसी तरह लोगों को पीड़ा से मुक्त कराना चाहूँगा” की अनुकम्पामय मानसिकता का भाव क्रमशः नीचे तक आ गया और आज के रिश्शो कोसेइ-काइ की नींव में है।

अपने पूर्ववर्ती नेताओं और सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन के साथ, मैं सदस्यों को 2018 की धर्मदेशना के अभ्यास के लिए मार्गदर्शन नीचे दे रहा हूँ।

विश्व और प्रकृति अविराम निर्माण और परिवर्तन से गुजर रहा है। विश्व की सत्यता की तरह, हमें स्थिर नहीं होना चाहिए, बल्कि सदा अभिनव भाव के साथ हमारे मार्ग में जो कुछ भी सामने आता है हम उनका सामना करें।

इस वर्ष हमारे संगठन ने अपनी स्थापना की अस्सीवाँ वर्षगांठ मनाया है। हमारे संस्थापक और उप-संस्थापक ने पूर्ववर्ती अनेक नेताओं एवं सदस्यों को साथ लेकर सम्पूर्ण समर्पण के साथ आज के अपने इतिहास की आधारशिला रखी थी।

इस सबसे महत्वपूर्ण वर्ष के दौरान, और रिश्शो कोसेइ-काइ की 100 वीं वर्षगांठ की ओर ध्यान रखकर, मुझे आशा है कि हम सभी को अपने पूर्ववर्तियों के प्रति कृतज्ञता के ऋण को चुकाने के लिए रचनात्मक ढंग से निरंतर आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प लेना होगा।

सदस्यों के धर्मदेशना के अभ्यास के मार्गदर्शन करने और अपने पूर्ववर्तियों के प्रति कृतज्ञता के अपने ऋण को चुकाने के महत्व के साथ ही मैंने यह अवगत कराया कि यह संगठन और व्यक्ति दोनों के लिए सृजनात्मक लक्ष्य है।

इस संबंध में, ह्वाइनानजी सहित चीनी क्लासिक्स में निम्नलिखित यादगार उद्धरणें मिलती हैं।

“जब कोई पचास वर्ष की आयु तक पहुँचता है, उसे पता चलता है कि उसने उनचास गलतियाँ की हैं।”

“साठ वर्ष में वह साठ बार परिवर्तित हुआ है।”

वे क्या कह रहे हैं? जब लोग पचास के हो जाते हैं, तो उन्हें यह सोचना चाहिए कि वे पिछले उनचास वर्षों में कैसा जीवन जी रहे थे और एक नए दृष्टिकोण के साथ एक नया प्रारंभ करें। जब वे साठ वर्ष के हो जाते हैं, उन्हें अपनी उम्र के अनुरूप उपयुक्त परिवर्तन करना चाहिए।

पचास और साठ की आयु में हम एक हद तक, पूर्ण मनुष्य बन जाते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि हमारा बिना ताजगी ह्रास आये ही विकसित करना जारी रह सकता है। इसका मतलब है कि हमें हमेशा पुनर्जीवन की शक्ति मिल रही है या निरंतर सृजन हो रहा है और मेरा मानना है कि यह किसी भी उम्र के किसी व्यक्ति के साथ संभव है।

हर कोई रचनात्मक ढंग से जीने के लिए आकांक्षा रखता है
हमें केवल उसे जानने और प्रदर्शित करने की आवश्यकता है

लेकिन ऐसा लगता है कि शब्द “रचना” आम तौर पर एक परिचित भाव नहीं देता है। शब्दकोश की परिभाषा

में “सर्वप्रथम किसी कार्य को करना, जो अब तक अस्तित्व में नहीं है।” यदि ऐसी स्थिति है, तो कुछ लोगों के लिए यह सोचना

अपरिहार्य होगा कि इसमें बड़ी बाधाएँ हैं जिसे पार करना कठिन है।

मैं एक अधिक परिचित तरीके से “सृजन” का अनुभव करता हूँ। जैसे कि पेड़ पौधे दिन-प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ते हैं, मुझे लगता है कि “मैं जब सुबह की शुभकामनाएँ कहता हूँ,” “मुझे यह एहसास हुआ,” कि “कल के बाद से बढ़ गया।” ऐसे कहना उन सभी लोगों के लिए सभी प्रकार का सृजन है।

ऐसा कहा जाता है, प्रारंभ से ही हम सभी में एक मानवीय विशेषता है। वह, निरन्तर वृद्धि करने, विकास करने और यथास्थिति से संतुष्ट नहीं रहने की कामना है। यह भी कहा जाता है कि हममें अपने अस्तित्व के लिए लक्ष्य है जो अधिक से अधिक उन्नत, और मूल्यवान और अल्पांश बृहत्तर होने का लक्ष्य है।

इसे दूसरे शब्दों में, मैं कहूँगा कि हम सबमें प्रारंभ से ही मन में रचनात्मक ढंग से जीने की आकांक्षा है; हमें इससे अवगत होना चाहिए और इसे प्रदर्शित करना चाहिए।

“आकांक्षा” (志) के लिए संयुक्त कांजी कैरेक्टर में “दस” (十) का कैरेक्टर और “एक” (一) का कैरेक्टर शामिल है, और नीचे “दिमाग” (心) का कैरेक्टर है। “दस” कई अभिलाषाओं और इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो मनुष्य है, और “एक” दर्शाता है कि इन अभिलाषाओं और इच्छाओं को एक में मिला दिया गया है।

जब हमारा मन “मैं यह करना चाहता हूँ, मैं ऐसा करना चाहता हूँ,” के विचारों से उद्विग्न होता है, आगे बढ़ना बड़ा मुश्किल होता है। यह महत्वपूर्ण है कि सर्वप्रथम अपने उद्देश्यों को घटाकर किसी एक पर स्थिर हों, और फिर उस पर ध्यान केंद्रित रखें और उस पर काम करें।

एक उद्देश्य में अपने सभी प्रयास करें, और जब यह पूरा हो जाए, तो एक नए को हाथ में लो। इस तरह बार बार दोहराकर हम अपने आप को मजबूत कर सकते हैं; यह, निरन्तर सृजन की प्रक्रिया है।

हमें “मनुष्य के उत्थान” की चुनौती में सारे प्रयास लगाना चाहिए

बीस वर्ष पूर्व, जब रिश्शो कोसेइ-काइ अपनी स्थापना की साठवीं वर्षगाँठ मना रहा था, उसने “प्रत्येक व्यक्ति के हृदय और मन के क्षेत्र को परिष्कृत करने” के सामान्य उद्देश्य की घोषणा की। बीस वर्षों के अन्तराल में, उस उद्देश्य को नवजीवन देने का एक के बाद एक प्रयास किया गया और रिश्शो कोसेइ-काइ ने अपने उद्देश्य की दिशा में निरन्तर प्रगति करता गया है।

संगठन के संस्थापक के सत्तरवें वर्षगाँठ के प्रारंभ से, हम सभी सदस्यों के घरों में गोहोनजोन (भक्ति की अभिव्यक्ति का केंद्रबिंदु) के रूप में शाश्वत बुद्ध शाक्यमुनि की प्रतिमा की स्थापना में लगे हुए थे। यह कहा जा सकता है कि इस व्यस्तता के माध्यम से, रिश्शो कोसेइ-काइ में बौद्धधर्म का मूलमंत्र, त्रिशरण गमन, के कार्य सम्पन्न हुआ। पिछले दस वर्षों के अंतराल में उन गृहस्थ सदस्यों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है जिनके घर में बुद्ध की उपासना की वेदिका दैनिक जीवन के केंद्र में है, हमारी व्यस्तता व्यापक रूप से स्वीकार्य हुई है और जड़ पकड़ ली है।

इन पिछली घटनाओं के आधार पर, हमें स्थापना से आगामी शताब्दी तक, पूरे शताब्दी को ध्यान में रखना है और प्राथमिक लक्ष्य, अर्थात् मानव संसाधन का विकास, या “मनुष्य उत्थान” में

सारे प्रयास करने चाहिए। यह हमारा सबसे महत्वपूर्ण मिशन है।

तो फिर, हमें किस तरह के लोगों से संबन्ध बढ़ाना चाहिए? कोई नहीं होगा उन लोगों के अलावे जो “बुद्ध हमारे संस्थापक और सह-संस्थापक द्वारा अन्य लोगों के लिए दिखाए गए प्रेम दया चिन्ता के साथ बोधिसत्त्व मार्ग (जिस पर मानव प्राणी को अवश्य चलना है) चलने वाले हैं और जिनके पास प्राकृतिक मानवीय गुण (प्रसन्नता, दयालुता और संवेदनशीलता) हैं।”

और हम ऐसे मानव संसाधनों का विकास कैसे करते हैं? इस निष्ठा की तीन मूल प्रक्रियाओं को अच्छी तरह से पालन करके किया जाता है, अर्थात् “सूत्रों को पढ़ना, दूसरों का धर्मनिष्ठा के पति मार्गदर्शन करना, अपने सदस्यों को रास्ते में समर्थन देना, और होजा सत्र में शामिल होना,” “धर्म का अध्ययन करना और अभ्यास करना।”

एक वाका कविता है जो उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ के जापानी कृषि सुधारक, दार्शनिक और अर्थशास्त्री निनोमीया सोन्तोकु की कीर्ति है:

“जब यह शरद ऋतु आता है, /

यह बारिश या तूफान लाता है, /
मैं निश्चित नहीं हो सकता हूँ;
तो आज मैं जो कुछ कर सकता हूँ /
धान के खेत की निराई करता हूँ।”

इसका अर्थ है कि वह यह नहीं जान सकता कि धान की फसल का क्या होगा जब शरद ऋतु वर्षा और तूफान के साथ आता है, लेकिन इसके बावजूद भी, उस समय उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अपने हाथों से घास-पात की निराई कर दे।

यह कविता हमें सुझाव देती है कि वर्तमान क्षण में क्या करना चाहिए।

मैंने स्वयं धान की बोआई की है। धान के अंकुरित पौधों की रोपाई के एक या दो हफ्ते बाद, घास-पात बढ़ने लगता है और उसकी निराई की आवश्यकता होती है। यह कार्य लगभग तीन बार किया जाना चाहिए, जिसे पहली निराई, दूसरी निराई, और तीसरी निराई कहते हैं। जिस पौधे को निकाला जाता है, उसे फेंका नहीं जाता है, बल्कि उसे धान की मिट्टी में गाड़ दिया जाता है, जो पौधों के लिए उर्वरक बन जाता है।

उसी तरह, आस्था के तीन आधारभूत अभ्यासों का निरंतर कार्यान्वयन हमारे मानव संसाधनों के विकास को आगे बढ़ाने के लिए आधार बनाता है। और जब हमारे परिवार और संघ समुदाय में हममें से हर एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं, एक-दूसरे से सीखते हैं और एक साथ बढ़ते हैं, जो अंततः “शरद ऋतु के फसल के मौसम” का स्वागत करना है।

जब लोग समय से पहले चीजों के बारे में चिंता करते हैं, वे, उन चीजों में जो हाथों से हैं उनमें पर्याप्त प्रयास करने में समर्थ नहीं होते हैं।

फिर भी, हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज हमेशा वह है जो “हमारे हाथ में है, हमारे सामने है।” इसका कारण है कि जिस समय का हम वास्तव में उपयोग कर सकते हैं वह “अब” है, नहीं अतीत है और नहीं भविष्य है। उपस्थित घटनाओं को ध्यान में रखकर, एक-एक कर सावधानी से करता है, वह जीवन परिपूर्ण बनाता है।

कुछ क्षण पूर्व मैं अपने संगठन के शताब्दी के विषय सोच रहा था कि अभी भी भविष्य में कुछ दूर है। लेकिन यह अब से केवल बीस वर्ष दूर है, मेरे सामने भी अतिशीघ्र करने की आवश्यकता है।

पूरी तरह समझ लें कि अब तक मैंने बार-बार आप सबको कहा है कि “शाक्यमुनि के मूल आशय को पूरी तरह समझ लें जिसे हम तक पहुँचाना चाहते थे।”

इसका अर्थ है कि हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि हम कितने भाग्यशाली हो चुके हैं और जो पहली दृष्टि में सहज नहीं लगे, उसमें बुद्ध की शिक्षा की गवेषणा करो। हमें यह जानना चाहिए कि सच्ची खुशी स्वयं और दूसरों की मुक्ति में है। अपनी स्वतंत्र आस्था में दूसरों की मदद लेने के बदले, हमें अपनी दृष्टि का नवीकरण करना चाहिए। कर्मनिष्ठता को ध्यान में रखो, अपने आप को प्रकाश बनाओ; धर्म को अपना प्रकाश बनाओ। स्पष्ट कहें तो, यह सत्य का मार्ग है।

शाक्य मुनि द्वारा मुक्ति की शिक्षा का अर्थ है “हृदय और मन के क्षेत्र को परिष्कृत करना है।”

मैं चाहता हूँ कि जैसे जैसे हम अपनी स्थापना के शताब्दी तक पहुँचते हैं, हमारे सदस्यों में से जितने संभव हो, वे बौद्धधर्मानुयायी के रूप में विकसित हों और सच्चे अर्थ में धार्मिक बनें।

मैं आप सभी में हृदय और मन के क्षेत्र को परिष्कृत करने में बिना जल्दबाजी और बिना आराम के, हमेशा और हर जगह एक होकर रहना चाहता हूँ।

कोसेइ शिंबुन जनवरी 7, 2018 संस्करण



Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2018

Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Sugunami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A.
Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibe-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka, New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai